शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.II, pp (571-574) April - June 2019

वाल्मीकि रामायण में कर्मकाण्ड का महत्त्व

डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा
राजकीय विद्यालय, रगोली, म0प्र0
Email : pramodmishra171986@gmail.com

व्युत्पत्ति

कर्मकाण्ड की परिभाषा एवं स्वरूप

कर्मकाण्ड वेद का वह विभाग है जो यज्ञ सम्बन्धी कृत्यों, संस्कारों तथा उनके उचित अनुष्ठान से उत्पन्न फल से सम्बन्ध रखता है। सामान्य रूप से हम किसी भी व्यक्तिगत अथवा सामूहिक कर्म के विधिवत् अनुष्ठान को कर्मकाण्ड कह सकते हैं ।

अर्थात् कर्मो को सम्यक् रूप से करने को विधान अथवा विधि विधान का वर्णन कर्मकाण्ड सम्बन्धी ग्रन्थों में मिलता है। महर्षि जैमिनीकृत पूर्व मीमांसा दर्शन कर्मकाण्ड का प्रतिपादक माना जाता है। इसके अतिरिक्त वेदों, उपनिषदों में भी यत्र तत्र कर्मकाण्ड का वर्णन मिलता है। ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों में भी कर्मकाण्ड का प्रतिपादन किया गया है। वाल्मीकि रामायण में भी अनेक स्थानों पर कर्मकाण्डों का वर्णन मिलता है। स्वयं प्रभु रामचन्द्र तथा उनके अनुजों, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न के जन्म का मूल कारण यज्ञीय कर्मकाण्ड (पुत्रेष्टि यज्ञ) था ।

जब राजा दशरथ महात्मा ऋष्यश्रृङ्ग को अपने घर ले आऐ तब ऋष्यश्रृङ्ग पुत्र प्राप्ति कराने वाले कर्म का अनुष्ठान करने के लिए राजा दशरथ को प्रेरित करते हुए बोले –

इष्टिं तेऽहं करिष्यामि पुत्रीयां पुत्रकारणात् ।
अथर्वशिरसि प्रोक्तैर्मन्त्रैः सिद्धां विधानतः ।।1।।
ततः प्राक्क्रमादिष्टिं तां पुत्रीयां पुत्रकारणात् ।
जुहावांग्नौ च तेजस्वी मन्त्रदृष्टेन कर्मणा ।।2।।

अर्थात् – महाराज । मैं आपको पुत्र की प्राप्ति कराने के लिए अर्थववेद के मंत्रों से पुत्रेष्टि नामक यज्ञ करूँगा। वेदोक्त विधि के अनुसार अनुष्ठान करने पर वह यज्ञ अवश्य सफल होगा। यह कहकर उन तेजस्वी ऋषि ने पुत्र प्राप्ति के उद्देश्य से पुत्रेष्टि नामक यज्ञ प्रारम्भ किया और श्रौतविधि के अनुसार अग्नि में आहूति डाली। इस कर्मकाण्ड के परिणाम स्वरूप यज्ञ का भाग्य प्राप्त करने देवता लोग पहुंचे तब कुछ देवताओं में रावण के अत्याचार से मुक्ति पाने हेतु ब्रह्मा जी से प्रार्थना की ।

इसके पश्चात् विष्णु जी के प्रकट होने पर सभी देवताओं ने उनसे महाराज दशरथ के पुत्र रूप में अवतार लेकर रावण जैसे राक्षसों से पृथ्वी की रक्षा करने की प्रार्थना की। जिसको विष्णु जी ने स्वीकार कर लिया तथा दशरथ को पुत्र प्राप्ति हुई। इसके अतिरिक्त ऋषियों के यज्ञों में राक्षसों द्वारा व्यवधान होने के कारण विश्वामित्र जी ने राजा दशरथ से उनके पुत्र राम

और लक्ष्मण को मांगा। राम लक्ष्मण को लेकर विश्वामित्र अयोध्या से डेढ़ योजन दूर सरयू तट पर विश्राम किया। राम और लक्ष्मण राजकुमार होते हुए भी तृणशय्या पर सोये । प्रातः काल जागने पर महर्षि विश्वामित्र श्रीराम से इस प्रकार बोले –

कौशिल्या सुप्रजा राम पूर्वा संध्या प्रवर्तते ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम् ।।3।।
तस्यर्षेः परमोदारं वचः श्रृत्वा नरोत्तमौ ।
स्नात्वा कृतोदकौ वीरौ जेपतुः परमं जपम् ।।4।।
कृताह्निकौ महावीर्यौ विश्वामित्रं तपोधनम् ।
अभिवाद्याति संहृष्टौ गमनायाभितस्थतुः ।।5।।

अर्थात् नरश्रेष्ठ राम ! तुम्हारे जैसे पुत्र को पाकर महारानी कौशिल्या सुपुत्र जननी कही जाती है। यह देखो प्रातः काल की संध्या का समय हो रहा है, उठो और प्रतिदिन किये जाने वाले देव सम्बन्धी कार्यो को पूर्ण करो ।

महर्षि का यह परम उदार वचन सुनकर उन दोनों नरश्रेष्ठ वीरों ने स्नान करके देवताओं का तर्पण किया और फिर वे परम उत्तम जपनीय मन्त्र गायत्री का जप करने लगे।

नित्य कर्म समाप्त करके महापराक्रमी श्रीराम और लक्ष्मण अत्यन्न प्रसन्न हो तपोधन विश्वामित्र को प्रमाण करके वहां से आगे जाने को उद्यत हो गये। उपर्युक्त प्रसंग से स्पष्ट है कि श्री राम और लक्ष्मण जैसे राजकुमारों में भी संध्या, गायत्री मंत्र आदि कर्मकाण्ड सम्बन्धी अनुष्ठानों के करने का संस्कार था। वे प्रतिदिन संध्या गायत्री मंत्र का उच्चारण विधि पूर्वक करते थे। ऋषियों द्वारा किये जाने वाले कर्मकाण्डों की रक्षा के लिए ही श्रीराम, लक्ष्मण तथा विष्वामित्र जी के साथ उनके आश्रम गये थे और मारीच सुबाहु आदि अनेक राक्षसों का वध किया था।

रावण वध के पश्चात् विभीषण को राज्य सौंपने का कार्य भी श्रीरामचन्द्र जी ने कर्मकाण्ड द्वारा किया जिसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार मिलता है –

एषाः में परमः कामों यदिमं रामणानुजम् ।
लडकायां सौम्य पश्येयमभिषिक्तं विभीषणम ।।6।।
एवमुक्तस्तु सौमित्री राघवेण महात्मना ।
तथेत्युक्ता सुसंहृष्टः सौवर्णं घटमाददे ।।7।।
तं घटं वानरेन्द्राणां हस्ते दत्वा मनोजवान् ।
व्यादि देश महासत्वान् समुद्रसलिलं तदा।।8।।
अतिशीघ्रं ततो गत्वा वानरास्ते मनोजवाः ।
आगतास्तु जलं गृह्य समुद्राद् वानरोत्तमाः ।।9।।
ततस्त्वेकं घटं गृह्यः संस्थाप्य परमासने ।
घटेन तेन सौमित्रिरम्यषिञ्चद् विभीषणम् ।।10।।

लंकायां रक्षसां मध्ये राजानं रामशासनात् ।
विधिना मन्त्रदृष्टेन सुहृद्गण समावृतम् ।।11।।
अभ्यषिञ्चस्तदा सर्वे राक्षसा वानरास्तथा ।।12।।

सौम्य ! यह मेरी बड़ी इच्छा है कि रावण के छोटे भाई इन विभीषण को मैं लंका के राज्य पर अभिशिक्त देखूं ।

महात्मा श्री रघुनाथ जी के ऐसा कहने पर सुमित्रा कुमार लक्ष्मण को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने बहुत अच्छा कहकर सोने का घड़ा हाथ में लिया और उसे वानर यूथ पतियों के हाथ में देकर उन महान शक्तिशाली तथा मन के समान वेग वाले वानरों को समुद्र का जल ले आने की आज्ञा दी। वे मनके समान वेग षाली श्रेश्ठ वानर तुरंत ही गये और समुद्र से जल लेकर लौट आये।

तदनन्तर लक्ष्मण ने एक घट जल लेकर उसे उत्तम आसन पर स्थापित कर दिया और उस घट के जल से विभीशण का वेदोक्त विधि के अनुसार लंका राज पद पर अभिशेक किया। यह अभिषेक श्रीरामचन्द्र जी की आज्ञा से हुआ था। उस समय राक्षसों के बीच में सुहृदों से घिरे हुए विभीषण राजसिंहासन पर विराजमान थे। लक्ष्मण के बाद सभी राक्षसों और वानरों ने भी उनका अभिषेक किया ।

उपर्युक्त प्रसंगों से स्पष्ट है कि वाल्मीकि रामायण में कर्मकाण्डों के महत्व का प्रतिपादन किया गया है।

संदर्भ – सूची

श्रीमद् वाल्मीकि रामायण (प्रथम एवं द्वितीय खण्ड)

रचयिता – महर्षि वाल्मीकि जी

प्रकाशक एवं अनुवादक – गीता प्रेस गोरखपुर

संस्करण – संवत् 2066 तद्नुसार 2009 ई0

1.वाल्मीकि रामायण – ष्लोक संख्या 2 सर्ग संख्या 15 काण्ड संख्या 1 (बालकाण्ड) पृष्ठ संख्या – **62**

2. वा0 रा0 – 2/15/1 पृष्ठ संख्या – **79**

3. वा0 रा0 – 3/15/1 पृष्ठ संख्या – **79**

4. वा0 रा0 – 2/23/1 पृष्ठ संख्या – **79**

5. वा0 रा0 – 3/23/1 पृष्ठ संख्या – **79**

6. वा0 रा0 – 4/23/1 अ संख्या – **79**

7. वा0 रा0 – 10/112/6 (युद्धकाण्ड) पृष्ठ संख्या – **549**

8. वा0 रा0 – 11/112/6 पृष्ठ संख्या – **549**

9. वा0 रा0 – 12/112/6 पृष्ठ संख्या – **549**

10. वा0 रा0 – 13/112/6 पृष्ठ संख्या – **550**
11. वा0 रा0 – 14/112/6 पृष्ठ संख्या – **550**
12. वा0 रा0 – 15/112/6 पृष्ठ संख्या – **550**
13. वा0 रा0 – 16/112/6 पृष्ठ संख्या – **550**